त्रि — फ — ला

...ल्य ।=)

नव रत्न
गोष्ठी
पुष्प ४




लेखक— श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

( एम. एल. एकेडमी, लहेरियासराय )

Scanned by CamScanner

## —वक्तव्य—

नवरत्न गोष्ठीक किछु प्रकाशन समाजक समक्ष उपस्थित भै चुकल अछि। एहि रूपक छोट छोट प्रकाशनक अभाव देखि प्रस्तुत पुस्तिका समाजक समक्ष रखबाक साहस करैत आशा करैत छी समाज एकरा पसिन्न करत। यदि समाजक अभिरुचि बढ़ैबा मे किछुओ सहायता ई कै सकल, समाजक द्वारा एकर किछुओ आदर भेलैक तँ नवरत्न ग्रन्थ मालाक एहि रूपक किछु पुष्प शीघ्रातिशीघ्र लोकक समक्ष हम उपस्थित करब।

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र

मुद्रक तथा प्रकाशक— भूपेन्द्र झा
मिथिला प्रेस,
दरभङ्गा।

# --समाजक मुँह--

# —समाजक मुँह—

भोकरन झा अपना समाजक बड़ प्रतिष्ठित लोक छथि, तैं हुनका विनु गामक पंचैती कोना भै सकैत अछि ? एहेन निसाफी पंच एहि परोपट्टा मे कहाँ दोसर देखबा मे अबैत छथि; दश पाँच एहेन लोक जखन समाज मे रहै; तखन ने ओकील - मुकतार, बनिञा - महाजन, अमला - फैला लोकनिक हाथ गरम रहैन्हि ।

भने बेरि पर एकटा गप्पो मन पड़ल अछि, सभ गोटे नहाइत रही; पोखरिक घाट पर टोलक पाँच सात गोटे बैसल छलाह, क्यौ हाथ मटिअबैत, क्यौ चानि मे तेल पचबैत, क्यौ दतमनि करैत तँ क्यौ कान पर जनउ भिड़िअबैत । नेनमणि बाबू जिहिआ करैत करैत ततेक ओकिऐला जे बोकरैत बोकरैत कनेक पित्त सेहो खसि पड़लन्हि ।

विलट महाग व्युत्पन्न लोक, व्यंगवाण चलैबा मे महाग चतुर; कोनो बात कँ लाड़ि चाड़ि, मिझैल आगि कँ खोंचाड़ि कनेक प्रज्ज्वलित कै अपने नाङड़ि झाड़ि पाछाँ पड़ैबा मे बेस फुर्तिगर । ओ कनेक लाड़ि देलथिन्ह—"नेनमणि बाबू सोआइत अहाँ कँ पित्त खसैत अछि, अहाँ कनेक पिताहो लोक छी, छोटो छीन बातँ आँखि पर लाली आबि जाइत अछि ।"

फुदाइ छल अगत्ती, गप्प मे कनेक नोन तेल सानि चासनी चढ़ौलक, कनेक मुसकुराइत कहलकन्हि—"विलट बाबूक गप्प

पालकीक बाँस जकाँ टेढ़े रहैत छन्हि। ओहि दिन नेनमणि काकाक मडुआ कुट्टी कुट्टी कै हिनकर खस्सी खा' गेलन्हि ताहि हेतु किछु दूनू गोटा मे उतराचौरी भेल छलन्हि, तकरे काथ हिनका मन मे छन्हि।"

एतबा कथा बाजब देरी छल कि नेनमणि बाबू कँ लेसि देलकन्हि, फुचू फुचू कै चारि टा कुडुर कैलन्हि, आँखि मे नोर भरि गेल छलन्हि तैं अङपोछा सँ मुँह कान पोछैत बाजि उठलाह—"ककरो बिनु ककरो निर्वाह भेनाइ कठिने छैक, एक समाज मे ककरो बिनु बननिहार नहि मुदा बेरि पर गोटेक धकट लोक अपने सँ अपन परिचय दै दैत अछि। बाप छलथिन्ह कमौआ, तँ खोआ खाइत छलाह, मुदा अपना मे से लूरि कहाँ छन्हि, तखन दादाक बलँ फौदारी कतेक काल? केदन कहलकै "जौड़ जरि गेल ऐंठन पड़ले अछि।"

विलट बाबूक जमुआ रंग पर—बाप पितामहक चर्चा सुनि—लाली दौड़ि गेलन्हि। मुदा जे अनका पर अधिक व्यंग्य करैत छैक तकरा पहिने अपना क्रोधक भण्डार मे ताला लगा लेबै पड़ैत छैक अन्यथा अनर्थक सम्भावना अधिक काल, तैं क्रोधक संवरण करैत विलट कहलथिन्ह—'नेनमणि बाबू! खिसिआइ जुनि, हमर तँ बापे कमौआ छलाह मुदा अहाँक तँ पितामहे गामक जेठरैअति रहथि, अपने पढ़लहुँ कोदराष्टक आ' धिआ-पूता चरबैत अछि महींस......

नेनमणि बाबू बीचे मे टोकि देलथिन्ह—जैह महींस रखैत

अछि सैह ने छाल्हिओ खाइत अछि, तोरा तँ सेहन्ते रहतह ?

विलट कैँ नहिं थम्हल गेलन्हि, पोखरिक घाट पर एँड़ी मँजैत कहलथिन्ह—छाल्हीक स्वाद तँ शालग्रामो कैँ नहिं बूझल हेतन्हि, तखन अपना कहाँ सँ बूझल हैत, घोर खाउ अपने, घिउ पठाउ बजार। ब्राह्मणो भोजन मे जखन कहिओ सजवी दही खोऔने रहितहुँ तखन ने बुझितहुँ, मुदा ताहू मे गोपाल दहिये, तखन तँ हमरा लोकनि बापक अमलदारीक खोआ सँ सन्तोष करै छी, अहाँ कैँ तँ सेहो नहिं।

एहि पर दूनू गोटा मे बेस थुक्कम फज्झैती भेलन्हि। दूनू गोटा मे अड़ारि, भीतरे भीतर आनाकानी। हिनका बहिआ कैँ ओ डाँड़ भरबौलथिन्ह, हुनका बहिआ कैँ ई मारि खोऔलथिन्ह।

एखन भरि गामक हेतु ई नवीन समाचार छल, बेकार बैसल लोकक अनमाना, गप्पी लोकनिक खोराक, चुगिला सभक पावनि, मुँह पुरुष लोकनिक आमदक द्वार। दूनू दिसुक गप्प सुनैत सुनैत कानकैँ अपच भै गेलैक, ओ लागल बहै, तैँ हेतु अस्पताल जैबाक हेतु नेआर करैत छलहुं तावत भोकरन बाबूक एकटा आदमी बजावै पहुँचल, उपाय कोन, अपन काज छोड़िकै भोकरन बाबूक ओहिठाम पहुँचलहुँ।

भोकरन बाबू मसलङ मे ओठङ्गि कै बैसल, नेन मणि बाबू गप्पक वखारी फोलने भुभुआ रहल छलाह। हमरा ओहि समाजक बीच मे रहबाक अवसर कम प्राप्त भेल अछि, तैँ ओहि

लपटघोंघी सँ हम परिचित नहिं तथापि बजौला उत्तर कोल्हु—आड़क महंकार जकाँ एक कात मे जा' कै बैसि गेलहुँ, चुपचाप कान पथने गप्प सुनैत जाइत छलहुँ। समाजक पाँच सात व्यक्ति सेहो बैसल छलाह। भोकरन बाबू बीच बीच मे हुँकारी भरैत जाथिन्ह, अवशिष्ट लोक भागवतक श्रोताजकाँ बैसल खन नेनमणि बाबूक दिस तकैत छलाह तँ खन भोकरन बाबूक दिस।

अन्त मे भोकरन बाबू लोइआ भरि थूँक जे मुँह मे जमाकै रखने छलाह से फेकलन्हि। तखन कहै लगलथिन्ह—नेनमणि! बिलटक मगजी उनटल छैक, दू बरख सँ दू चारि कट्ठाकै खेतजे कीनि लैत अछि, तैं ओकरा गौरवँ कतहु ठाम नहिं अछि मुदा "व्रजन्ति ते मूढ़धियः पराभवम् भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः" हँऽ.............

नेनमणि बाबू गम्भीर होइत पुछलथिन्ह—तैं हेतुएँ ने अहाँक ओहि ठाम ऐलहुँ अछि। कोनो रस्ताँ धराउ, नहिं तँ ई आजुक छौंड़ा तकरा एतेक गौरब?

भोकरन बाबू महाग सुस्तँ कहलथिन्ह मकुनमा सँ एहि बेरि जे कबाला लेलक अछि ताहि मे कोन घुरमन तेरी [ओभरौट] लागल छैक से बूझल छहु?

नेनमणि बाबू उत्सुक होइत कहलथिन्ह—कहाँ बूझल अछि। भोकरन बाबू मुसकुराइत कहलथिन्ह—ई सब गप्प तँ हमरा सँ पूछह। तोँ खदुका कँ थोड़ बहुत लऽ दऽ कऽ लिखा' लैह, तखन हे देखह जे कोना हलाल कैल मुर्गी जकाँ छटपटा' उठैत अछि!

समाजक सब बैसल छलाह, मुदा बकार बन्द कैने, हमरा किछु बजबाक इच्छा भेल, मुदा असल पूछी तँ हम छलहुँ अनठीआ, ओ गाम हमरा पिताक बैमात्रेय केर मातृक तैँ हम ने घरवैआ, ने पाहुन, तैँ चुप्पे रहलहु ।

× × ×

"एक रत्ती देखार बात कहने केहन होइत छैक से देखलिऐन्हि नेनमणि बाबूकेँ, ओहि दिन सँ कछमछैल फिरैत छथि, मुदा कछमछैने हेतन्हि की, ? हमरा मे दोख कही की गून मुदा अवसर पर उचित बात अपना बापो कँ कहबन्हि" ई कथा भरल दलान लोकक बीच मे बिलट बाबू बिहुँसि बिहुँसि बाजि रहल छलाह । हमहुँ दाढ़ी कटौने चल अबैत रही भोकरन बाबूक दलान पर दै, तँ देखल भोकरन बाबू मसलङ मे ओठङल छथि आ' बिलट पोथा पसारने, लोक सब हँऽ मे हँऽ मिला रहल अछि ।

भोकरन बाबू नेतिआक हाथ सँ तमाकुलक गर्दा एक चुटकी लै नाक मे खोंसलन्हि ताहि पर गड़गड़ैलाह तखन कहलथिन्ह "बिलट ! नेनमणि अछि बुड़राक, ओकर जे ऐंठी अछि से तँ कहल नहि जा' सकैत अछि, तोरा प्रसग जे ओकर गप सप होइत छैक से हमरो सुनि कै असह्य भै उठल । मुदा हमरा किछु कहबाक अधिकार त नहिं छल, खाली दुःख अवश्य भेल । ओना तँ जे किछु, मुदा "शठे शाठ्यं समाचरेत्" तैँ हुनका सँ सावधाने रही सैह नीक"।

ओहू दिन समाजक दश गोटे छलाह, एहि कथा पर हुँकारिए

भरलथिन्ह नकारी नहिं। हमरा ई बात बड़ असंगत लागल। हम एक दिन एकान्त मे भोकरन बाबू कँ जा' कै पुछलिऐन्हि— भोकरन बाबू ! एहि दूनू व्यक्ति सँ कोनो पुरान शत्रुता अछि ? एहन कूट नीतिक अनुसरण तँ समाज कँ रसातल पहुँचा देत ?

उत्तर में भोकरन बाबू कहलथिन्ह– "अहाँ एखन नेना छी, दोसर बात जे समाजक बीच में रहबाक सौभाग्य अहाँ कँ कम काल प्राप्त होइत अछि। हम ध्यान में रखबाक योग्य एक टा बात कहैत छी, गीरह दै कै राखू कारण जे "वृद्धानां वचनं ग्राह्यम्" - समाज मे एहिना होइत छैक, समाजक मुँह मे क्यौ लागै, ओकरा सन ओकरा कहिऐक, एकरा सन एकरा, बीच मे अपने भिल्ली भाड़ि कै खाइत रहू, ताही मे अपन कल्याण, दूनूक टीक हाथ मे रहल, गामक रमन चमन सेहो चलैत रहल'।

हम मनहिं मन एहन महापुरुष कँ गोड़ लागल, आ' जगदम्बा जानकी सँ कहलिऐन्हि जे एहन एहन दराधक मुँह सँ समाजक रक्षा अहीं करी तँ हो, अन्यथा एकर उत्थान असम्भव बुझना जाइछ।



# दुइ चित्र

रामदेव झा

# दुइ-चित्र

बापक मरिते ,
बुच्चू बाबूक कटै छन्हि दिन
भिनसर सँ लै
दस बजे राति धरि ,
टोल समाजक ,
घर परिवारक ,
अपन, और सौंसे संसारक ,
अंट संट अधलाहक, नीकक ,
चिन्ते टा करिते करिते ,
बापक मरिते ।
सौंसे वेदान्तक सार—वस्तु
श्राद्धक प्राते सँ बुझै लगलथिन्ह ,
जा' धरि बाप कमौआ छलथिन्ह ,
लिखबै छलथिन्ह ,
पढ़बै छलथिन्ह ,
पहर पहर भरि-
जीवन मे ओझरेलहा गीरह
सोझरैबा केर बुद्धि

बैसि सिखबै छलथिन्ह ,
सब साधन प्रस्तुत रहै छलन्हि ,
सदिकाल ,
जखन जहिना खैता
जहिना पीता ,
जाहीं सँ हिनकर नाक डोइन्हि ,
तीमन-साजन
हिनके रुचिएँ
खखना बज़ार सँ लबै छलन्हि ।
धोबिश्रा कें नित्त विना ऐने
ई धोती नहिं फेरैत छला,
भरि टोलक नवतुरिश्रा छौंड़ा कें
छलै उठौना नित्त सिनेमा ।
से बुच्चू बाबूक मलिन तन ,
मलिन वसन ,
श्रा, मलिन मनक उल्लास देखि,
जे मुग्ध रहै छल
श्राइ क्षुब्ध श्रछि
श्राबि पिबै छल नित्त चाह जे
श्राबि कहै छल वाह ! वाह ! जे
से सब नाक सिकोड़ि रहल श्रछि ।
ई सब सोचि ..

बताह जकाँ
बौऐला, ढहनैला बहुतो दिन,
किन्तु—
एक अवलम्ब घरक,
घर भरि लोकक,
तैँ चित्त शान्त कै
बुच्चू बाबू,
बापक बरखी करबा लै
ऐला है भोरुका गाड़ी सँ।
तहिए सँ माय बताहि छथिन्ह
जहिए ई तजलन्हि गाम अपन
भरि वरख बितौलन्हि ओ बूढ़ी
सोमवारी मंगलवारी मे।
तैँ की ओ गहना बेचि लितथि?
पुतहुक मुँह बिनु गहने देखितथि?
रहि रहि मनमे छन्हि आबि रहल
"जनिका बल सँ रानी बनि कै
जीवन सौंसे यापन कैलहुँ
छल बात हृदय मे
जे तहिआ
की पूरि सकत से?
हे भगवत्ती!

तखन करब सन्तोख कोना ?
बिनु गहने पुतहुक मूँह देखि नहि सकब,
ताहि ले जीवी आ' की मरी"।
बुच्चू बाबू विधुऐल,
बेचारें जीवन भारें दबल,
जाँत लदलाहा गदहा जकाँ
जीह हथ हथ भरि छला बबैत,
तेसरे दिन बापक बरखी छलन्हि पबैत।
कोठी ढनढनहे सब घरमे,
लत्ता, कपड़ा, सहजहिं आजुक युगमे लगलै' आगि,
ई सब रहि रहि मन पड़ैत छन्हि
लुत्ती दै' छन्हि दागि,
फुटलो कौड़ी एखन हाथ पर
लिखबे नहि केलथिन्ह भगवान।
बिच्चे आङन, बुच्चू बाबू
दूनू हाथेँ पकड़ि कपार
सोचै लगला —
"हमरा लेखेँ शून्य आइ सौंसे संसार,"
जीवन पट पर पछिला चित्र,
देखि देखि कै मोन विचित्र—
भै रहलन्हि अछि
सोचि रहल छथि

"कहबै ककरा
धरत हाथ के" !
बुचु क दूनू नयन-कमल सँ
बहि चललन्हि अछि धार,
हृदय मे धैर्य आइ धरिते धरिते
बापक मरिते ।
ई देखि हाल
बूढ़ीक कोंढ़ छन्हि कापि रहल ।
बुचबा चमार
रस्ता धैने एखनहुँ अछि राग अलापि रहल
जे " कमला मैया सपना देलकै "
ओ होइते सब दिन प्रात
खाय भरि पेट बासिए भात
धरै' अछि स्टेसन दिसकेर बाट,
मरम्मति अछि करैत जुत्ताक
कमा' कै नित्त लबै' अछि टका पाँच वा सात ।
फिकिर ओकरा कथीक रहतैक ?
साँझ खन तारी कसि कै पीबि,
राति भरि भेल रहै उन्मत्त,
ने गारिक लाज
ने मारिक ड'र
गामसँ कनिञे दूर फराक

बान्हि नेने अछि बुचबा—
छोट छीन बाँसे केर एक टा घ'र
रहै' अछि ताही मे सन्तुष्ट,
रहथु क्यौ रुष्ट,
रहथु वा तुष्ट,
धारनें छन्हि नहिं ककरो रीन
ने ककरो एक्को पाइ उधार
मस्त छै बुचबा केर संसार।
ने बापक बरखी छै' करबाक
ने बेटा केर छैक उपनैन
रहै' अछि सब झंझट सँ चैन'
कहै' छन्हि भगवत्ती कें जाय
मन्दिरक द्वारे पर भै ठाढ़
"सदै पनही बाबू भैयाक
हमर भागें धरि रहौ टुटैत
जाहि सँ भरि परिवारक हेतु
रहौ ढौआ धरि खूब जुटैत।



# निरक्षरता निवारक पाठशाला

[illegible]

# निरक्षरता निवारक पाठशाला

—प्रथम दृश्य—

[स्थान—सोनेझाक दलान, गोनड़ि ओछौल, कतवहिमे कुट्टी काटक हाँसू राखल, एकटा छुतहड़ ओंघड़ैल, एकटा चरपाइ पर सोने झा बैसल, माँझिल बेटा एमहर सँ आबि ओमहर जाय लगैत छथिन्ह—]

सोने झा—हौ पाँचो ! सबटा कड़ची बथाने पर पड़ल छह, महींस काछड़ि कटैत कटैत सब गोंत गोबर कँ घोरि कै अमौट बना देलकह आ' तों टलवाहि कैने फिरैत छह ?

(पंचमनि मुँह दूसि कै पड़ा जाइत अछि)

सोने झा—हौ बूड़ि ! क्यौ नहिं काज औतह, धन्न ई बुढ़िआ महींस जे चुरकी पर तेल, एमहर अबै' छह की आउ ?

(पंचमनि मुँह फुलौने अबैत अछि)

पंचमनि—हमरा भाइ कहलन्हि अछि पंच सब कँ बजा लाबै ।'

सोनेझा—बड़ पंचक नाँति बनलाह अछि, जेहने ओ बूड़ि, कने गान्ही टोपी माथपर लेलन्हि की नबाब भै गेलाह जतेक नाढ़र से गामच पंच, अपन काज करह गऽ की हम एही हाँसू सँ कुट्टी कुट्टी कै देब ।

[सोनेझा ओकरा पर हुड़कैत छथिन्ह, तावत् गान्धी टोपी पहिरने चतुर्भुजक प्रवेश—]

चतुर्भुज—एँ हौ पंचमनि ! तों गेलाह नहिं ?

[पंचमनि इसारासँ बूढ़ाक दिस देखबैत छैन्हि]

चतुर्भुज—सब नाश कैलह।

सोने झा—ई: बूड़ि नाढ़र नहि तँ, अपने लोकक पाछाँ पाछाँ ढहनैल फिरैत छथि, आ' ई जँ घरक काज करैत अछि तँ नाश कैलकन्हि ?

चतुर्भुज—काका ! अहाँ बुझैत छिऐक किछुने आ' सब बात मे दखल देबै लगैत छिऐक।

सोने झा—हँऽ हौ जे हम नहि किछु बुझैत छिऐक तैं ने तोरा सन वंश कुड़हरि, खाली बेंट लागब बाँकी छह, से लगा देल जाह तँ अङरेजिआ कोदारि भै जैबह। हौ ! पंचक पाछ् पाछ् घुमने कोन नेढ़ा भेटतह ?

चतुर्भुज—[कनेक जोर सँ—]हमरा कोन काज्ज अछि पंचक ?

सोने झा—तँ किऐक कहैत छहक बजा' लाबै ?

चतुर्भुज—भरि गामक लोक मूर्खे मूर्खे अछि तैं..........

सोने झा—तैं तोरा की ?

चतुर्भुज—हमरा की ? हमरा यैह जे स्वतन्त्र देशक युवक छी ई सब देखि कै लाज होइत अछि।

सोने झा—आ' अपने धाकड़ सन भै गेलाह, तैओ घर दुआर नाश होइत छह तकर लाज नहिं ?

चतुर्भुज—से हमरे द्वारेँ नाश होइत अछि ? ताहि लै हम की करब ?

सोने झा—तोँ की करबह, खाली भरि गाम क पाछू नुड़िऐल फिरह, अपने लीखि पढ़ि कै कटहर मे नेढ़ा लगवैत छह, आब चललाह अछि भरि गाम केँ पढ़ाबै।

चतुर्भुज—अहाँ सँ के लागौ "कनही गाइ केर भिन्ने बथान"

सोने झा—(चतुर्भुज केँ हुरपेटैत)– एँ रौ ! तोरा लेखेँ हम कनही गाय, पड़ाह एहि ठाम सँ की हम ......

चतुर्भुज—अहाँक मारने हमर इज्जति कहाँ चल जैत, बाप तँ बेटा केँ मारिते छैक डँटिते छैक, मुदा दुलारो तँ उऐह करैत छैक।

सोने झा—तोरे सन चुल्हिचन केँ दुलार करतैक।

चतुर्भुज—हौ पंचमनि ! तोँ झट दै जाह, कहिहौन्हि जे स्कूल पर अबैत जैताह शीघ्रे ने तँ साँझ पाड़ि जैतन्हि।

सोने झा—अपना जत्तै जैबाक होअऽ से जाह, ओ नहि जैतह।

पंचमनि—ईः हम जैब ने तँ की ?

सोने झा—जाह तँ हम देखैत छिअहु।

[पंचमनि जाए लगैत अछि सोने झा मारै दौड़ैत छथिन्ह चतुर्भुज पकड़ैत छथिन्ह, पंचमनि पड़ाइत अछि, सोने झा सब कड़ची पात के उठा कै छीटै लगैत छथि, परदा खसैत अछि।]

## दोसर दृश्य

[स्थान—गाम स्कूल तीन व्यक्ति बैसल छथि,–चतुर्भुजक प्रवेश,]

चतुर्भुज—औरो गोटे कतै जाइत गेलाह ?

एक पंच—सब अपना अपना काजक लेल चारू भाग छिड़िऐल छथि।

दोसर— कोन काज अछि सभक ?

तेसर— औ चतुर्भुज बाबू ! परमिन्ट तरमिन्टक काजमे जतेक कम लोक रहत ततेक नीक, अपने सब मिलि कै सब काज कै लेब सैह ठीक। जखन पंच भेलहुँ आ' अपनो लोकवेद नीक जकाँ खुसफैल सँ नहि रहल, दू पाइ बाइली प्राप्ति नहिं, तखन तँ भाँड़ो छुइल आ' पेटो नहिं भरल, की, औ नेना बाबू ?

नेना बाबू– अवस्से की।

दोसर पंच--हमर तँ बिचार होइत अछि जे चतुर्भुज बाबू पर भार गामक लोककेँ विश्वास छैक, हिनका पाड़ गेलासँ सब काज सोझरैले अछि।

चतुर्भुज--औ नेना बाबू ! एहि बुद्धिएँ गामक उन्नति हैब कठिन अछि। हमरा लोकनिक ऊपर बड़ भारी भार अछि महात्मा गान्धी बड़ सूक्ष्म दृष्टिएँ हमरा लोकनिक जीवनक अध्ययन कैने छलाह, ओ बुझैत छलथिन्ह जे बड़े बड़े नगरक अभ्युत्थान सँ भारतबर्षक जन-साधारणाक जीवन उन्नत हैब असम्भव, एहि ठामक संस्कृति हमरा गामक कणकणमे मिलल अछि, तैं हुनकर ध्यान भारत वर्षक गाम पर गेलन्हि। हमरा लोकनिक

आँखिक सोझाँ जतेक स्थावर जंगम पदार्थ अछि सब हमरे अहाँक सुख सुविधा एवं आत्म विकासक साधन थिक, अतएव ई सिद्ध अछि जे एहि निखिल भूमण्डलक सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्ये अर्थात् हमहीं अहाँ थिकहुँ, समस्त सृष्टि पर एक मात्र मनुष्यक अधिकार छैक आ 'से मनुष्य अपना अधिकार सँ वञ्चित अछि' ई कथा महात्मा जीक आँखिमे बड़ खटकलन्हि, ओ एही हेतुएँ सब सँ पहिने ग्रामोद्योग पर जोर देलथिन्ह जकर प्रतीक थिक चर्खा।

नेनाबाबू—अवस्से की।

तेसर— चर्खा सँ कोन उन्नति भेल, ?

चतुभुज—चर्खा हमरा स्वावलम्बिता सिखवैत अछि, भोजनक चिन्ता हम अहाँ सब दिन करैत छी, मुदा वस्त्रक नहि, ।

नेनाबाबू—अवस्से की।

चतर्भुज—अन्न, वस्त्र दूनू अत्यन्त आवश्यक वस्तु थीक, प्रत्युत अन्नक अभाव मे दू चारि दिन प्राण धारण कै सकैत छी, मुदा वस्त्रक अभाव मे एकोक्षण बितैब परम संकट, की तकर चिन्ता हम अहाँ करैत छी ?

दोसरपंच—नहिं।

चतर्भुज—हमरा अहाँ कें स्वतन्त्र शब्दक अर्थ नहिं लगैत अछि।

नेनाबाबू—अवस्से की।

चतर्भुज—यदि हमरे अहाँक विचार पतित हो तँ स्वतन्त्रता के लेत ? तेहना स्थिति में सरकार जँ कोनो सुविधाक प्रबन्ध करत तँ हमरे अहाँक हाथेँ ! आ' हम अहाँ अपन स्वार्थ साधन मे लागि जाइ तँ ई दोष सरकारक अथवा हमरा अहाँक ?

तेसरपञ्च—हँऽ मुदा······ !

चतर्भुज—मुदा तुदा किछु नहि, बिनु हमरा सभक बिचारेँ समाजक कोन गति ?

नेनाबाबू—अवस्से की।

दोसरपञ्च—ई बात सब बुझैक तखन कि ने,

तेसर——खाली हमरे अहाँक बुझने तँ हेतैक नहिं, तखन बुड़िपनी करी जे अपनो दुःख काटी, आ' कि नहिं औ !

नेनाबाबू—अवस्से की।

चतर्भुज—सब कोना बुझतैक ?

दोसरपञ्च—सैह कहू !

तेसर——हमरा अहाँक साध्य थिक जे सौंसे संसारक लोककेँ बुझौने फिरबैक, कहू औ !

नेनाबाबू—अवस्से की !

चतभुज—साध्य किऐक ने थिक। एकर कारण छैक अशिक्षा, जतेक शिक्षित लोक रहल ततेक एकर महत्व बुझतैक से जँ अधिक केँ शिक्षित बना' देल जाय तँ सब

अपन अपन उत्तरदायित्व बुझै' लगतैक।

नेनाबाबू—अवस्से की ।

चतुर्भुज—तैँ हमर बिचार जे एकगोट निरक्षरता निवारक पाठशाला फोली ।

दोसरपक्ष—ओ कोना हेतैक ?

चतुर्भुज—जतेक लिखल पढ़ल लोक छी से यदि प्रतिज्ञा करी आ' कम सँ कम दस व्यक्ति केँ शिक्षित बनाबी तँ एक सँ दस, दस सँ सै, सै सँ हजार तुरत भै जैत। तैँ हेतु साँझ खन जे समय घूड़लग बितैत अछि से एहि काज मे लगाबी तँ कोन क्षति ?.

दृश्य तेसर

सबगोटे—कोनो क्षति नहि

(ई कहि सब उठि जाइत छथि पट परिवर्त्तित होइत अछि)

[स्थान—नेना बाबूक दलान, घूड़ पजरल अछि चारि पाँच व्यक्ति बैसल अछि खोरनासँ घूड़केँ खोरैत—]

गूजन—नेवालाल ! ई: आगि जे अछि अल्हुआ पकैबाक जोग।

सन्तलाल—तऽ बड़ विलच्छन आँगि अछि

नेवालाल—बूझल नहि छह—

बड़का घूड़क ओ भुम्हुर आगि
धोंसिआय दैत छल हृदय दागि,

गूजन—आगिमे पकौल आलूक साना महाग सोन्हगर होइत छैक।

सन्तलाल–जँ कनेक सुन्ना कड़ू तेल रहैक।

नेवालाल–आ' सेहो अँचारक।

गूजन—आब सैह भेटब दुर्लभ।

सन्तलाल–तऽ आइ छोटकनि काकाक आङनक भोज मे बड़ी जे चिटचिटाइनि लगैत छल।

नेवालाल–ताहि मे किछु सोनक दोष आ' किछु सोनारक।

गूजन—से बात धरि ठीके, परसरमा बाली कें बड़ी रान्हहु नहिं अबैत छैन्हि।

सन्तलाल–आं' ताहि पर स टिपौरी की।

गूजन—अदौड़ी भाँटा सेहो झौंसाइनि

सन्तलाल–आ' तिलक अँचार जेना विलाड़िक ....... ॥

नेवालाल–दुर छी अँचारो कें दूरि कैल।

सन्तलाल–हौ ! तिल जे छैन्हि भैअन काकाक धूर पर।

गूजन—आ' घास ?

नेवालाल–ओहेन चएठ क्यौ गाममे अछि ?

(चतुर्भुज प्रवेश करैत)

चतुर्भुज–अहाँ लोकनि की करैत छी ?

सन्तलाल–पहाड़ ढाहै छी।

गूजन— रेलवी पर रोड़ा खसतै

नेवालाल–कोन रेलवी पर ?

सन्तलाल–यैह चतुर्भुज बाबू अपना गामे दऽने रेल मङौथिन्ह।

(चतुर्भुज कनेक क्रुद्ध होइत छथि किन्तु हँसमुख मुद्रा बनबैत—)

चतुर्भुज—अहाँ लोकनि चाही तँ हवाइ जहाज पर्यन्त आबि सकैछ ।

सन्तलाल—ओ उतरत कतै ?

गूजन—सौंसे बाधकेँ परती बनबा देथिन्ह ।

चतुर्भुज—हटाउ एहि गप्पकेँ, हम जे कहब से करब ?

नेवालाल—भला कहू ।

सन्तलाल—अपना गामक महात्मा गान्धी यैह छथिन्ह की ।

गूजन— दुर बूड़ि ताहू सँ बेसी, ई तँ जमाहिरे लाल...

(सब ठहाका मारि हँसैत अछि, नेना बाबूक प्रवेश)

नेनाबाबू—चलै चलह उपर, जे जे पढ़बै छथुन्ह से से पढ़ह ।

(सब दलानपर जाइत अछि)

चतुर्भुज—पढ़ैत जाउ

सन्तलाल—अहाँ पढ़ाउ ने

गूजन— आब एहि बुढ़ारी बैस मे हिं हिं हिं हिं

नेवालाल—कपारक लिखलाहा

चतुर्भुज— (पाटी पर किछ लीखि कै) तरटेका कऽ

सन्तलाल—तट्टेका कऽ

गूजन— आ' दुर बूड़ि तऽर टेका कऽ

नेवालाल— नहिं भेलह, कैलह तँ जन्मभरि महिंसवारि तखन हेतह कोना, कहक तऽ र ठेका कऽ

[सब ठहाका मारैत अछि, सोने झाक प्रवेश]

सोनेझा—एँ हौ चतुर ! एही सँ जीवन चलतह ?

सन्तलाल–सोने काका ! अहूँ थोड़े पढ़ि लिअऽ ।

गूजन—–अहींक बेटा मास्टर तखन अहाँ कँ कोन कम्मी ?

नेवालाल–जकरे माय मरैक तकरे पात भात नहि ?

सन्तलाल–अहाँ कँ गुरूक सप्पत थिक ।

चतुर्भुज––बेजाइए कोन ?

सोने–हँऽ हौ चतुर ! छौंड़ी, सिखाबै बुढ़ दादी कँ ?

नेनाबाबू–सोने काका ! क्षति कोन ? आउ थोड़ेक पढ़ा' दैत छी

सोने झा—हे लैह (कहि बैसि जाइत छथि) हौ आजुक छौंड़ा कँ सलाइ तँ नहियेँ ओनै पड़तैक ।

नेनाबाबू–से किऐक सोने काका ?

सोने झा—आब सब अपने आगि मुतैत अछि तखन·······

(सब ठहाका दैत अछि)

नेनाबाबू–सोने काका ! लिअऽ भट्ठा

(सोने झा भट्ठा धरैत छथि)

नेनाबाबू–पढ़ू ! क' ख' ग' घ' ङ'

सोने झा–कखगघ उवाँ

नेनाबाबू–उवाँ नहिं ङ'

सोने झा– न ?

नेनाबाबू–न' नहिं , ङ ,

सोने झा–गं ,

नेनाबाबू–गं नहिं, नाक लऽ कऽ कहिऔ

सोने झा–नाक लऽ कऽ ?

नेनाबाबू–हँ ऽ , क’ ख’ ग’ घ’ नाक लऽ कऽ ङ’,

सोने झा–क– खऽ गऽ घऽ नाक लऽ कऽ खुँः

(सब ठहाका मारैत अछि)

सोने झा– (सब केँ डँटैत ) बुड़ि सटही सब नहिं तऽ, ठि ठि ठि ठि ? कालिह जँ सब नहिं सुना दी तँ सोने नाँव नहि।

सन्तलाल–कालिह की.? आइ सुनाबी तँ बूझी मर्द।

(सोने झा पहाड़ा पोथी पर थोड़ेक काल आङुर फेरि कै एक स्वरें क’ सँ क्ष, पर्यन्त पढ़ि जाइत छथि )

सब––– वाह रे सोने काका ······

सोने झा––कनेक आरो थम्हह, (थोड़ेक काल ठोर पट पटबैत छथि पुनः कव्विर काने कऽ कांचून काऽ सँ लै दू बुन्ना दू पासी कः धरि, स्वर मे पढ़ि जाइत छथि, )

सब––– वाह रे सोने काका वाह, वाह,

सोने झा––हौ मनुक्ख जे चाहै से कै सकैत अछि। आब एकबार नहिं पढ़ी तँ मोंछ ने राखी·········

(सब हँसैत अछि, परदा खसैतअछि)





# नवरत्न ग्रन्थ मालाक अन्य पुष्प—

प्रकाशित

| | | |
|---|---|---|
| गुदगुदी | ( द्वितीय संस्करणक प्रतीक्षा करू ) | ॥=) |
| त्रिफला | | ।=) |
| कृषक | 'माथुर' | १) |
| वनकुसुम | राघवाचार्य शास्त्री | १) |

## अग्रिम

| | |
|---|---|
| वीरकन्या | श्री 'अमर' |
| पंचपात्र | श्री 'अमर' |
| युग चक्र | श्री 'अमर' |
| विदागरी | श्री 'अमर' |

मिथिला प्रेस, कटहलबाड़ी दरभङ्गा
( सुन्दर और सुलभ छपाइक हेतु ध्यान राखू )